घुघूति बासूति

भाग–1 (कुमाउनी)

उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों का संकलन

(लोरी, पर्वगीत, क्रीड़ागीत, पढ़ाई–लिखवाई, आंण एवं आशीर्वचन)

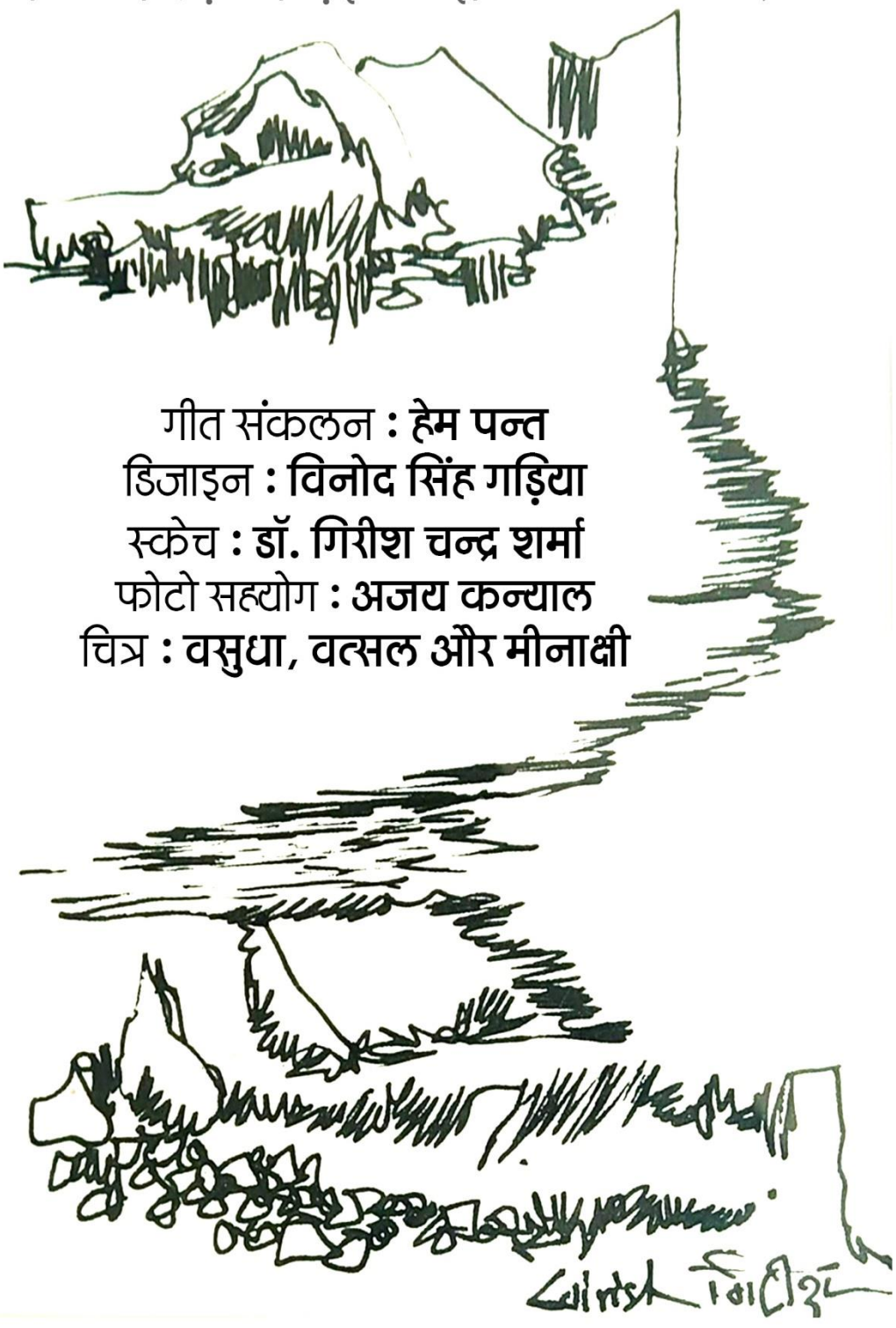

गीत संकलन : **हेम पन्त**

डिजाइन : **विनोद सिंह गड़िया**

स्केच : **डॉ. गिरीश चन्द्र शर्मा**

फोटो सहयोग : **अजय कन्याल**

चित्र : **वसुधा, वत्सल और मीनाक्षी**

वसुधा, वत्सल, मीनाक्षी, मयंक, गुंजन, दिव्यांशी, नमन
और उनके सभी दोस्तों के लिए।

CREATIVE UTTARAKHAND

"Spreading Culture to the Next Generation"

घुघूति बासूति

भाग–1 (कुमाउनी)

(उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों का संकलन)

अपनी बात

बालगीत हम सबके शुरुआती जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। लोरी में घुला लाड़–प्यार, त्यौहार के गीतों में रचे–बसे संस्कार और बाल सखाओं के साथ खेल–खेल में गाये गए गीतों का उत्साह आजीवन हमारे साथ बना रहता है।

मेरी यादों में बसे ऐसे ही कुछ पारंपरिक बालगीत अपने दोनों बच्चों के साथ गुनगुनाते हुए मुझे महसूस हुआ कि इन गीतों को संकलित किया जाना चाहिए। फेसबुक के ग्रुप ``कुमाउनी शब्द सम्पदा`` में साथियों ने कुछ बालगीत उपलब्ध करवाए, उसके बाद मैंने विभिन्न स्रोतों से गढ़वाली–कुमाउनी बोली के लगभग 70 बालगीत एकत्रित किए। मुझे लगता है कि यह इस काम की सिर्फ शुरुआत भर है, अभी हजारों ऐसे पारंपरिक बालगीत लोगों की स्मृतियों में जीवित हैं जिन्हें संरक्षित किया जाना है। पहाड़ी इलाके में पारंपरिक खेल भी थे, जो बच्चों रचनात्मक शारीरिक–मानसिक विकास के लिए जरूरी थे, वो भी समय के साथ भुला दिए गए हैं।

इस E-book में संकलित उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों से गुजरते हुए आपको महसूस होगा कि गीतों के माध्यम से बच्चों को अपने परिवेश, समाज, पर्यावरण और खेती–पशुपालन की जानकारी बड़ी सरलता से मिल जाती है। इन पारंपरिक बालगीतों की विषय–वस्तु की व्यापकता, रचनाशीलता और बच्चों के चारित्रिक विकास में इन गीतों की भूमिका एक गहन शोध का विषय हो सकता है।

बहुत से साथियों ने इन पारंपरिक बालगीतों के संकलन में योगदान दिया, मैं उन सबका आभारी हूँ। इसी संकलन से ``हल्लोरी`` गीत लेकर कमल जोशी और हमारे अन्य साथियों ने मिलकर एक सार्थक लघु फिल्म बनाई, यह फिल्म YouTube पर उपलब्ध है। भाई विनोद गड़िया ने डिजाइन की जिम्मेदारी ली और इस E-book को सुन्दर रूप दिया, उनका भी धन्यवाद।

सांस्कृतिक–सामाजिक संस्था ``क्रिएटिव उत्तराखण्ड`` का हमेशा प्रयास रहा है कि हमारी समृद्ध विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सही रूप में हस्तांतरित होती रहे। उम्मीद है कि इस तकनीकी युग में E-book के माध्यम से अपनी जड़ों से जुड़े रहने की यह कोशिश आप अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएंगे, खासतौर से बच्चों तक।

``घुघूति बासूति – भाग 2`` भी कुछ समय बाद आप सबके बीच होगा जिसमें गढ़वाल अंचल के पारंपरिक बालगीत होंगे।

हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

(हेम पन्त)

ईमेल : hempantt@gmail.com

अपनी बात

मेरा बचपन उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती अंचल में बीता है। घुघूती बासूति जैसे बालगीत हों या काले कौआ काले, फूलदेई छम्मा देई जैसे पर्वगीत, बचपन में गाये ये गीत मस्तिष्क पटल पर आज भी मौजूद हैं। यहाँ मैंने अपने बचपन को जी भर कर जिया है। अक्सर माँ को छोटे भाई को लोरियां गाकर सुलाते हुए देखा है। आज जब इस E-book को डिजाइन करते हुए ये लोरियां, पर्वगीत, आँण पढ़ने को मिली तो बचपन की वो सम्पूर्ण यादें तरोताजा हो गईं। माँ, दीदी, नानी के साथ बिताये वो ठंडी रातें याद आने लगी जब हम एक दूसरे से आँण पूछते थे और सही उत्तर न बता पाने पर `आँण लाग` जैसे भारी भरकम शब्द के बोझ/कर्ज को सहते थे। बाल सखाओं के साथ गाये घुघुतिया और फूलदेई के गीत एक बार बचपन की ओर लेकर गईं।

अपनी कड़ी मेहनत और लगन से एकत्रित किये गए इन बाल गीतों को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने के लिए श्री हेम पन्त जी द्वारा जब E-book बनाने के लिए मेरे सहयोग की बात कही, तो मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। लेकिन मेरे सामने बहुत सी चुनौतियाँ थी। मैं न तो पेशेवर ग्राफिक्स डिजाइनर हूँ और न मुझे इस तरह के कार्य करने का अनुभव हैं। शौकिया तौर पर जो भी मुझे बनाना आता है, मैंने अपना पूरा योगदान देने की कोशिश की है। कोरोना लॉकडाउन के अनिश्चितता भरे इस समय में मिले लम्बे विराम का इस E-book से अच्छा और क्या सदुपयोग हो सकता था। बच्चों द्वारा कल्पना की उड़ान भरते हुए उन्मुक्त मन से बनाए गए सहज–सरल चित्रों को प्रयोग करने से मेरा काम कुछ हद तक आसान बन गया और रोचक भी।

इस E-book को रूप देते हुए महसूस किया है यह एक E-book नहीं बल्कि बचपन है। अक्सर लोगों को कहते हुए सुना है `कोई लौटा दे मेरा बचपन'। तो इस E-book को पढ़कर, देखकर महसूस कीजिये अपना बचपन। साथ ही आज के उन नन्हें बच्चों तक भी पहुंचायें ये लोरियां, पर्वगीत, क्रीडागीत ताकि वे भी अपने अंचल की माटी में रचे–बसे संस्कारों को ग्रहण कर सकें। मुझे विश्वास है कि यह E-book बच्चों में `दुदबोली के संस्कार' पैदा करने में सफल होगी।

सादर

विनोद सिंह गड़िया
gariya2010@gmail.com

1

लोरी

हल्लोरि बाला हल्लोरि, हल्लोरि बाबा हल्लोरि
तेरी ईजू पालड़ी घास जै रैछ
घास काटि ल्याळी, फिरि दुद्दू पिलालि
तौलि में भात खा ले
नौला को पानि पिले
गुदड़ी में पड़ि रौले
हल्लोरि बाला हल्लोरि, हल्लोरि बाबा हल्लोरि।

घुघूति बासूति
E-book

इस प्रसिद्ध लोरी में पहाड़ी महिलाओं की कठिन दिनचर्या की झलक भी मिलती है।
https://tinyurl.com/vqfx9ol

लोरी

2

काबुड़ी कव्वा छ,
डाला में भव्वा छ।
उक्खल में पिन्ना छ,
देली में आमा छ।
देखिये आमा बालो,
कव्वा पिन्ना खालो।

घुघूति बासूति
E-book

आँगन में ओखल कूटने और साथ ही पालने में सोए हुए छोटे बच्चे की देखभाल करने का वर्णन।

3

लोरी

हा चड़ि हा, हा चड़ि हा
ताल गाड़ा ग्यूं पाक्या, माल गाड़ा जौं पाक्या
बीच में मंसूर पाक्या
हा चड़ि हा, हा चड़ि हा
ठुल रुख बेडू पाक्यो, चड़ि ले सबै चाख्यो
हा चड़ि हा, हा चड़ि हा

घुघूति बासूति
E-book

छोटी सी कहानी के माध्यम से गांव के परिवेश और खेती–बाड़ी का सुन्दर चित्रण।

लोरी

4

कौ लाटा काथ,
सुण काला तू
स्यूंड़ हरै गौ,
खोज कांणा तू
अनाड़ी ले चौरि करि,
दौड़ डुना तू
निन्नी को बखत एगो,
सै बाला तू

घुघूति बासूति
E-book

हास्य का पुट लिए हुए एक छोटी सी कहानी पिरोई गई है इस लोरी में।

लोरी

5

बड़-बड़ नाक्कि, जन बसो माक्खि
बड़-बड़ पाक्कि, सोज्या में राक्खि
ऐगे पोथु कि काक्खि, लागलि काक्खि
बड़ बड़ नाक्कि, जन बसो माक्खि

घुघूति बासूति
E-book

लाड़ –प्यार से भरी हुई सुन्दर लोरी ।

लोरी

6

ओ मेरि देवरानि बालो देखि दिए
हालो री बाला हालो री
धान गोड़न जांछू, बालो मरि जांछ
हालो री बाला हालो री
ओ मेरि जेठानि बालो देखि ल्यूलो
हालो री बाला हालो री
ओ मेरि देवरानि जी रये जागि रये
हालो री बाला हालो री
फुलि जाए फलि जाए, जी रये जागि रये।
हालो री बाला हालो री

देवरानी–जेठानी के बीच प्रेम भरा संवाद।

घुघूति बासूति E-book

लोरी

7

भौ की निनुरी ये जाली, चुप-चुप आंखी भै जाली
फूल दिसाण छजै जाली, दू-दू भाति खै जाली!

मुसी खटपट झन करिए, माखी भिन-भिन झन करिए!
घुघूती घू-घू झन करिए, कोयल कू-कू झन करिए!

कुकुर हूं-हूं झन करिए, बिराऊ म्यांऊ म्यांऊ झन करिए!
बाकरी मैं मैं झन करिए, सुवा टे-टे झन करिये!

घुघूति बासूति
E-book

बाछी हम्मे झन करिए, भैंसी बाई झन करिए!
दातुली छणमाण झन करिए, तौली डीनमिन झन करिए

कसनि तू मुख झन पड़िये, डाडू तू माठु माठु रडीए!
बड़ बजियु की हवाक सुनिए, हलकी भै गुड़घुड़ करिए!

पर्वगीत 1

"फूलदेई छम्मा देई, दैंणी द्वार भर भकार
तुमार भकार भरीजो, हमार टुपार
फूलदेई छम्मा देई, जतुके ढिछा उतुके सही
फूलदेई छम्मा देई, दैंणी द्वार भर भकार
त्वै देई कैं बार-बार नमस्कार"

घुघूति बासूति
E-book

फूलदेई पर्व के दिन बसंत ऋतु के स्वागत में बच्चे फूलों की टोकरी लेकर हर घर में जाते हैं और इस गीत को गाकर मंगलकामना करते हैं।

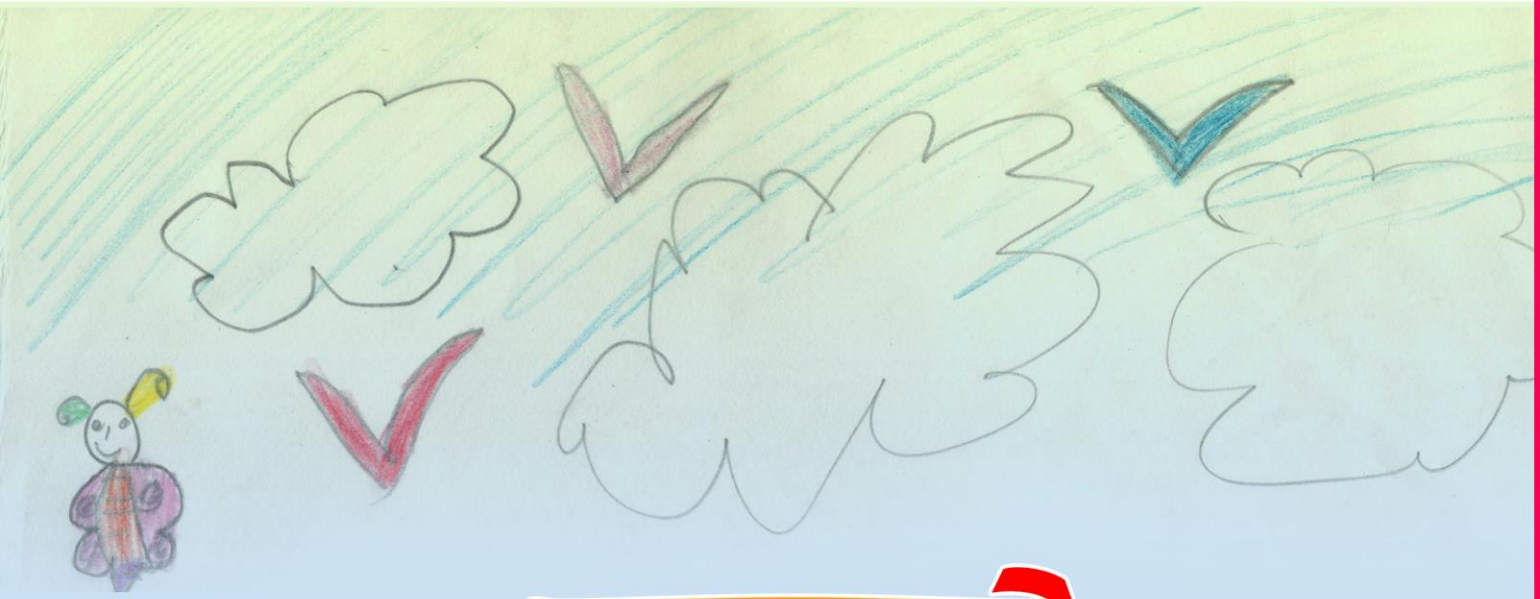

पर्वगीत 2

काले कव्वा काले, घुघुतिक माला खाले
काले कव्वा का का, पूस कि रोटी माघे खा
काले कव्वा आ जा, लगड़ पूरी खा जा
ले कव्वा बड़ो, मैं कैं दिए सुनाक घड़ो
ले कव्वा ढाल, मैं कैं दिए सुनाकि थाल
ले कव्वा तलवार, मैं कैं दिए भलो भलो घरबार

घुघूति बासूति
E-book

मकर संक्रांति पर्व पर बच्चे आटे से बने मीठे पकवानों की माला गले में पहनते हैं और इस गीत को गाते हुए कव्वे को पकवान खाने के लिए बुलाते हैं।

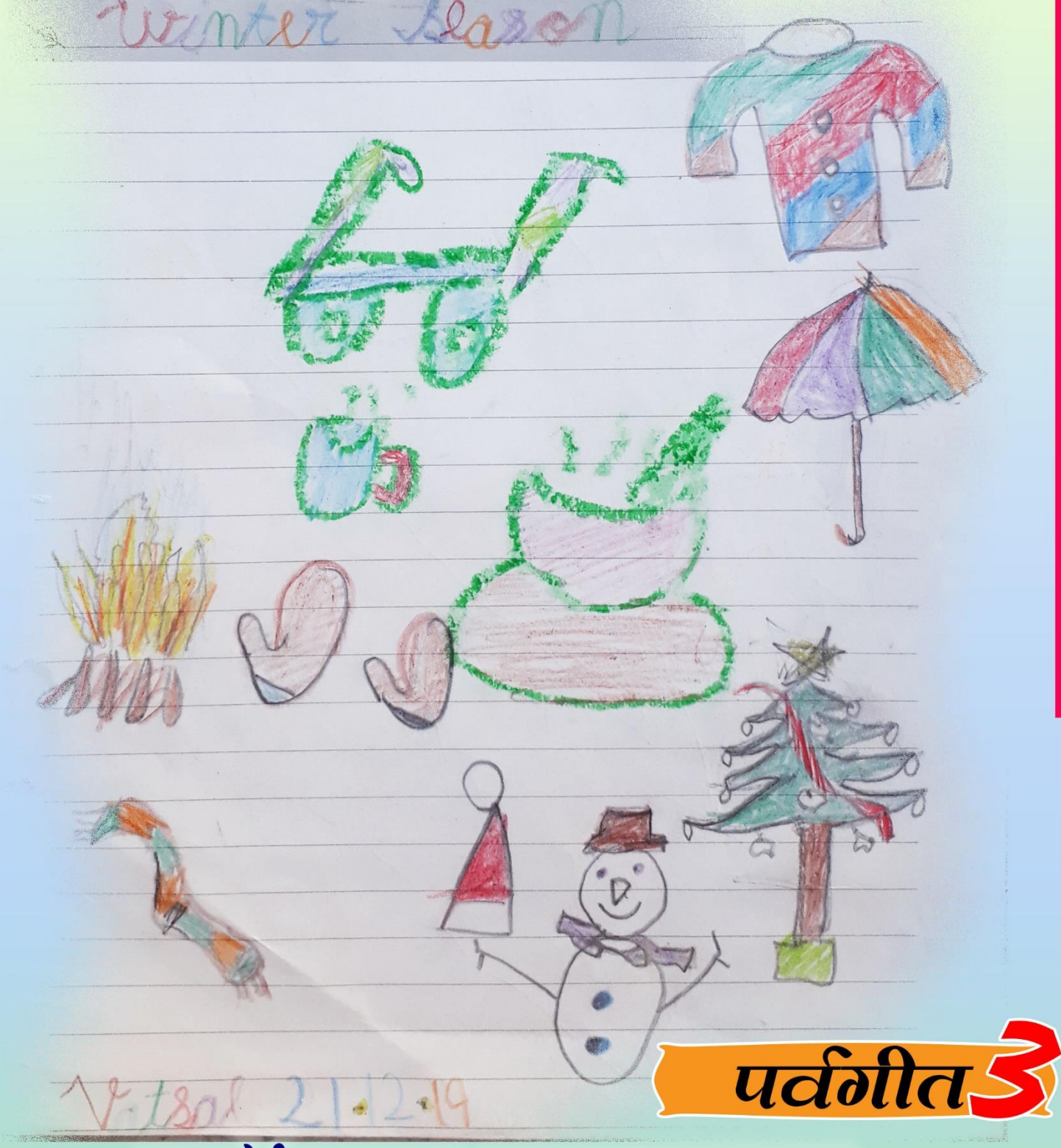

पर्वगीत 3

फूलदेईक छापड़, खतड़ुवा क काकड़
घुतिक भाव, उतरैनिक काव
बसंत पंचमिक जौं, सोनोक हर्याव
बगवाइक च्यूड़, चौतोक आव
त्यारोक घ्यूं, आब कि कूं

घुघूति बासूति
E-book

इस गीत में उत्तराखंड के विभिन्न पारम्परिक लोकपर्वों का उल्लेख है।

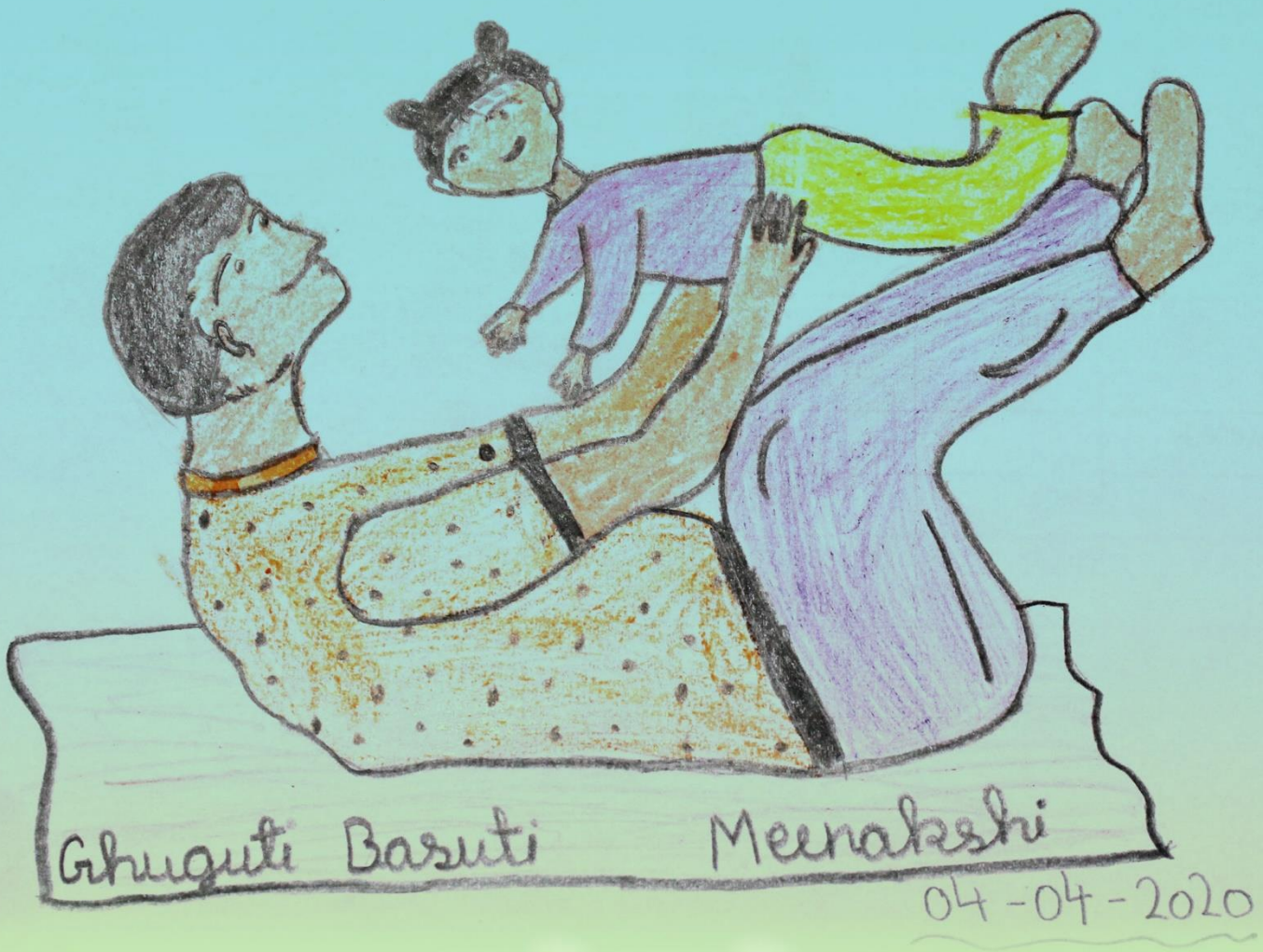

कीड़ागीत 1

घुघूति बासूति
आमा कां छ ?
खेत में छ
कि करन रे छ ?
घास काटन रे छ
घास को खालो ?
गोरु बाच्छी खालि
गोरु दुद्दू दे लो
भव्वा उकें पि लो

बच्चे को पीठ या लेटकर पैरों में झुलाते हुए यह गीत गाया जाता है।

कीड़ागीत 2

धनपुतली धान दे, कौव्वा खा छी कान दे
धनपुतली दान दे, सुप्पा भरी धान दे
तेरी बरियात पछिल देखुंल, बरखा ऐगे जांण

घुघूति बासूति E-book

जमीन से निकलती हुई धनपुतली (Flying Ants) देखकर बच्चे जिज्ञासापूर्वक यह गीत गाते हैं।

क्रीड़ागीत 3

आ आ चड़ि तेरे काटेंगे कान
किसने चुराए लाला जी के धान
खाई-पीई चड़ि मोटी बनी
ताल गाड़ा, माल गाड़ा, घर को गई
चड़ि चूं चूं, मुसि चूं चूं
धान मंडुवा तूने खाया, कपड़ा काटा क्यों ?

घुघूति बासूति E-book

हिन्दी-कुमाउनी मिश्रित भाषा युक्त यह गीत बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाता है।

कीड़ागीत 4

च्यूं मुसि च्यूं,
द्वी दाना ग्युं
घट पिसी ल्यूं
कि त्वै द्यूं
कि मैं खूँ ?

घुघूति बासूति
E-book

दो या अधिक बच्चे एक दूसरे की हथेलियों के पिछले हिस्से पर चिंगोटी काटते हुए यह गीत गाते हैं।

कीड़ागीत 5

बरखा दीदी इथकै आ, घाम भिना उथकै जा
घामपानि-घामपानि स्यालोक ब्या
कुकुर बिरालु बरियाती ग्या
मैं थे कुनान दच्छिना ल्या।

घुघूति बासूति
E-book

बारिश में भीगते हुए आनंद से भरकर बच्चे इस गीत को गाते हैं।

कीड़ागीत 6

खेल दरी, दरी का दरी
दरी न्है गे हिमाल दरी
को दरी बिछालो दरी, म्यार बाज्यू बिछाला दरी
को दरी बैठोलो दरी, म्येरि ईजू बिछाला दरी
खेल दरी, दरी का दरी
दरी न्है गे हिमाल दरी

घुघूति बासूति
E-book

गोल घेरा बनाकर सामूहिक नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत।

कीड़ागीत 7

काँस काटो, बाँस काटो
खिन्न काटो मैदान
रियूंनी चेलि मिले मांगि
तब मैं बन्यु पधान

घुघूति बासूति
E-book

बालिकाओं–किशोरियों द्वारा गाया जाने वाला सामूहिक नृत्यगीत।

Dated : / /

कीड़ागीत 8

छक-छक छापरि मोत्यूं का दाणा
पारि बटि आयो कुमय्या राणा
कुमय्या ले मिकैं धान दी
धान मीं ल ऊखल कैं दी
ऊखल ल मिकैं चावल दी
चावल मीं ल तौलि कैं दी
तौलि ल मिकैं भात दी

घुघूति बासूति
E-book

अनाज की यात्रा, खेत से रसोई और फिर हमारी थाली तक।

कीड़ागीत 9

अटकन बटकन दही चटकन
बन फूले बनवारी फूले
दाता जी का झुल्ला झूले
ओड़ मोड़ दैनि हत्थि तोड़
बरखा लागि झमाझम, बुड़ भाजि बन बन
लै बुढ़ी खाजा, त्येर गोरु भाजा

घुघूति बासूति E-book

बच्चों का पसंदीदा शरारत भरा गीत।

कीड़ागीत 10

उड़कुच्चि मुड़कुच्चि दाम दलेच्ची
लइयां लैंची पीतल कैंची
ओड़ कि चेलिया कसि कसि छैन
बिंद्राबन में खेलनि खेल
ओड़ मोड़ दुई हात्थि तोड़

उत्साह से भरा सामूहिक नृत्यगीत।

घुघूति बासूति E-book

कीड़ागीत 11

ल्वार ल मिकैं दरांति दी
दरांति मैं ल घसियारी के दी
घसियारी ल मिकैं घास दी
घास मैं ल गोरु कैं दी
गोरू ल मिकैं दूध दी

घुघूति बासूति
E-book

पशुपालन प्रक्रिया की साधारण शब्दों में अभिव्यक्ति।

कीड़ागीत 12

पारि पातल बाघ भेटि
बाघल मैं है, छौंन दी
छौंन मैंल, चील थें दी
चीलेल मैं है, परव्यान दी
परव्यान मैंल, ल्वार थें दी
ल्वारल मैंहै, स्वीड़ दी
स्वीड़ मैंल, ढोलि थै दी
ढोलिल मैंहै, बुटुवा दी
बुटुवा मैंल, ओखल कुटुवा थें दी
ओखल कुटुवा ले मैंहै, खाजा दी
खाजा मैंल ग्वाला थें दी
ग्वालाल मैंहै, दांथुलि दी
दांथुलिल मैंल, घास काटी

घास मैंल, गोरू थें दी
गोरुल मैंहै, दूध दी
दूध मैंल, ठेकीन घालि
ठ्यकील मैंहै, दै दी
दै मैंल, ननियान घालि
ननियानल मैंके, नौनि दी
नौनि मैंल, भदल्यो न घालि
भदल्योल मैंके, घ्यू दी
घ्यू मैंल, राजा थें दी
राजाल मैंहै, घ्वाड़ दी
घ्वाड़ में मैं चढ़ि जौंला
खिचड़ि भात खौंला

घुघूति बासूति
E-book

जौहारी बोली का गीत : सामाजिक परिवेश और पशुपालन की महत्वपूर्ण जानकारी।

कीड़ागीत 13

पारि पातल मामि भेंटि
मामि हाथ तामि छी
तामि भरि चूख छी
चूख धैं चाटूँ, मामि धैं भेटूं

घुघूति बासूति
E-book

जोहारी बोली का गीत : पत्थर की गोटियों से गिद्दू खेलते हुए गाया जाता है।

कीड़ागीत 14

वखड़ दाना खरे-बरे
निमुवा दाना रस
रस बल्दक कुड़ा निभै
उच्च ढुंग मां बस

घुघूति बासूति
E-book

जोहारी बोली का गीत : पत्थर की गोटियों से गिट्टू खेलते हुए गाया जाता है।

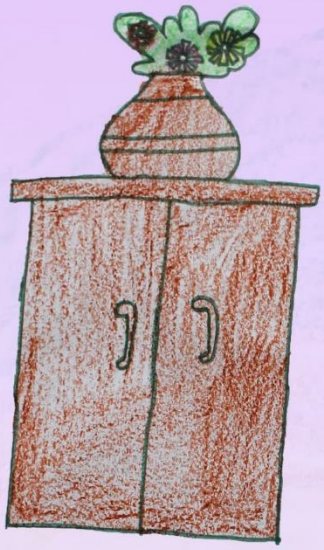

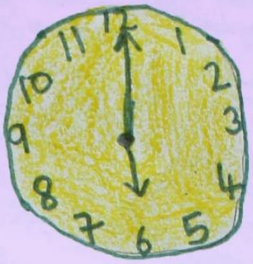

पढ़ाई-लिखाई 1

एक बजे इकतारा
दो बजे द्वारिकानाथ
तीन बजे त्रिलोकीनाथ
चार बजे तो चारधाम
पांच बजे परमेश्वर नाम
छे बजे छबीले श्याम
सात बजे सुंदर नाम
आठ बजे आठों याम
नौ बजे नमो नारायण
दस बजे दामोदर नाम

घुघूति बासूति
E-book

अंकों के साथ बच्चों का पहला परिचय।

पढ़ाई-लिखाई 2

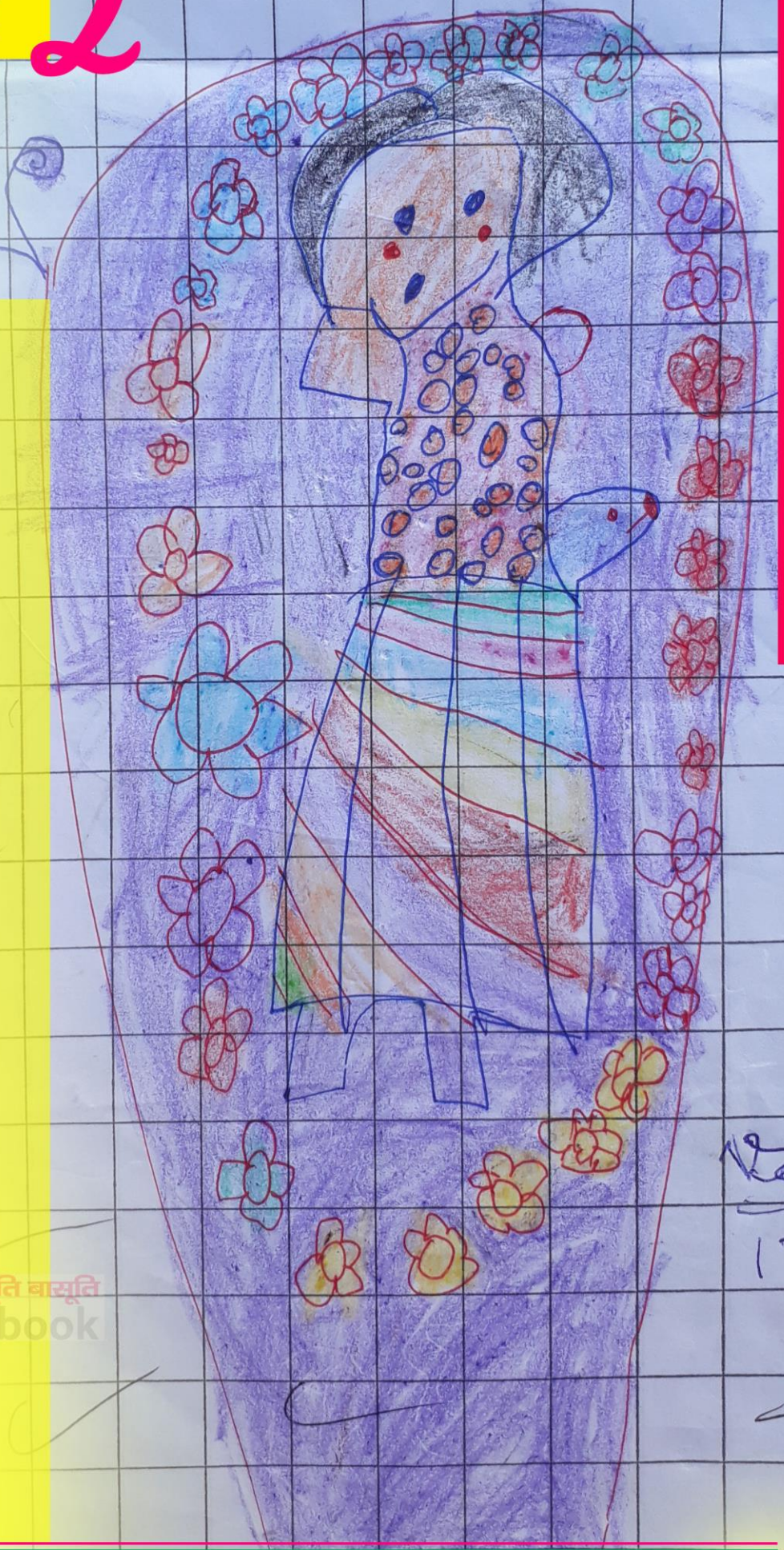

बाठि रे बाठी !
बामणुंक बाठी !
तिति कर्यौल !
चार वे चाना !
पाँच ने पाना !
छः छट्टंगी !
सात सत्यौलअ !
आठ अठ्यौलअ !
नौ को नागन !
दस का फागन !
ग्यार मेरो भाई !
बार बग्वाई !
तेरअ को भइ्डू !
चौद चमेली !
पन्दर परमेश्वर !
सोलह में बाजी ठन !
रे ठना ठन !

घुघूति बासूति E-book

पत्थर की गोटियों से 'गिट्टू' खेलते हुए बच्चे गिनती सीखते हैं।

पढ़ाई-लिखाई 3

अ आ बच्चि का
इ ई बचुलि दी
उ ऊ परिया बू
ए ऐ माटाकि डई
ओ औ गुड़कि डऊ
अं अः स्कूलक थें जल्दी ओ

घुघूति बासूति
E-book

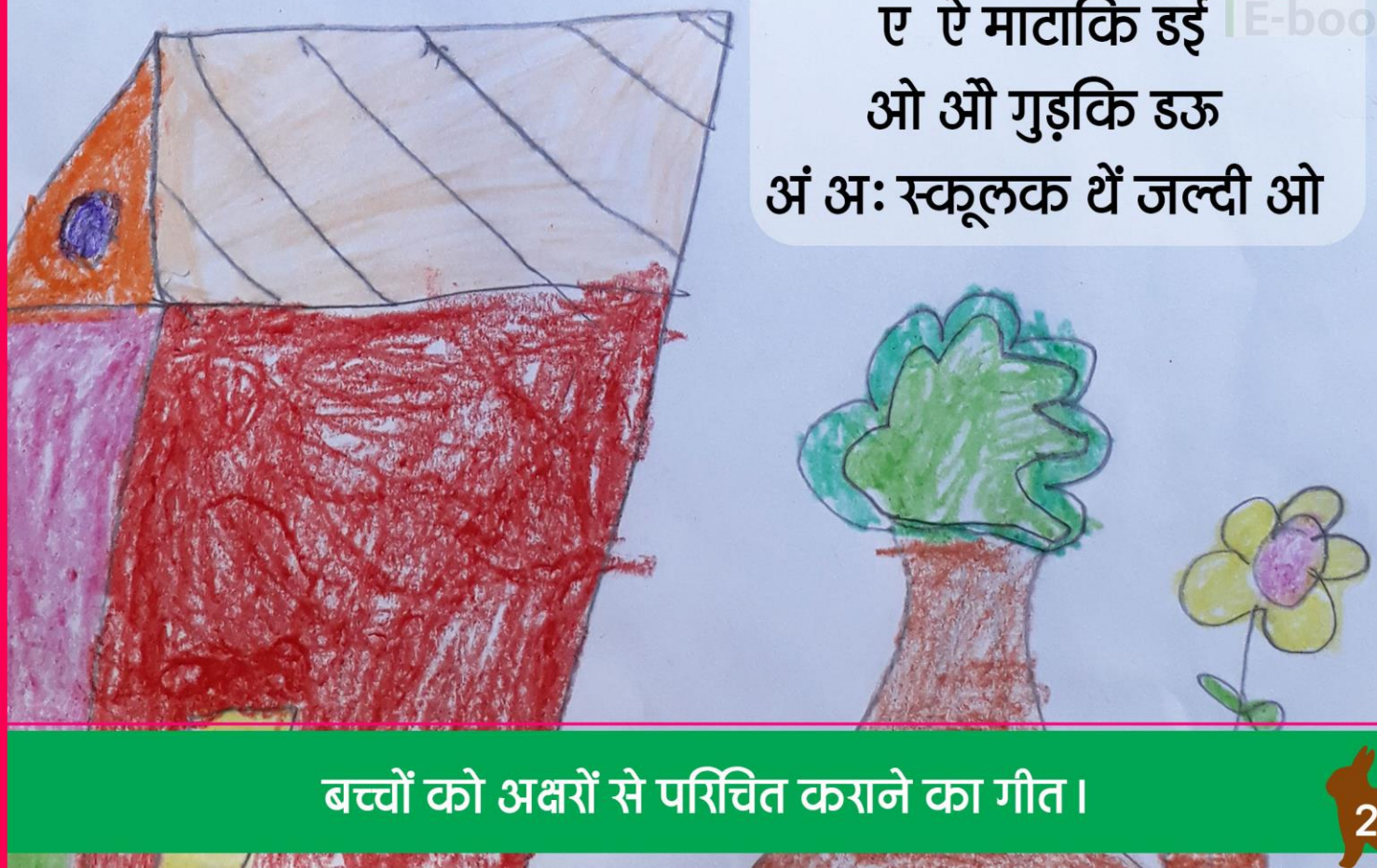

बच्चों को अक्षरों से परिचित कराने का गीत।

Vatsal 27.1.20

पढ़ाई-लिखाई 4

तितुर चाखुड़, मुस–भ्याकुड़, पिरौड़ी–घिनौड़ी
म्यार मुलुक चार करनि, उड़नी दौड़ी–दौड़ी
गड़मौलिया, लम्पुछड़ि, टिपराई, करौल
जोड़ी में घुघुत बासनि, दांग में सिरौल

घुघूति बासूति
E-book

विभिन्न पक्षियों के नाम (लेखक – बालम सिंह जनौटी)

पहेलियां (आंण)

1

अलंगे रानि पलंग बिछा
सूरज आयो झपके लीजा

2

टनटन तबलंग दिनिया में खबर नि,
एक फल में ल पायो, उठिल ने गुठिल

3

एक नानि नानि छोरि
पुर परिवार कें रुलुछि

4

छ्यां कर म्यां कर
मि नि त क्या कर

5

तू मेरि टोपि खाले
में तेरि लोति खूंल

6

बालापन में हरो भयो, जवानी में लाल
बूढ़ापन में कालो भयो, करो पंच विचार

7

लाग लाग कूंण में नि लागण
बिलग कूंण में लागि जां

8

लाल चड़ि बटनदार
वीक च्याल नौ हजार

9

हिटण में सुस्त, देखण में काव,
चौमास में देखिंछ, खांण में छाव।

10

थाली भरी मोतियों कि
को गणिं सकूंछ

11

तु हिट
मी ऐग्युं

12

औंणैल खाय, पौंणैल खाय
कम्मु डेल बकाय रय।

13

स्यौलि सिकोड़ टोड़ि नै सकिन,
झल्लू बल्द बै नै सकिन।

14

अघिल सुकिल
पछिल बे मैल

घुघूति बासूति
E-book

1.पाला 2.ओले 3.मिर्च 4.नमक 5.हिसालु 6.काफल 7.होंठ 8.लाल मिर्च 9.जोंक
10.आकाश के तारे 11.लाठी 12.आम और गुठली 13.सांप और बाघ 14.मूशल

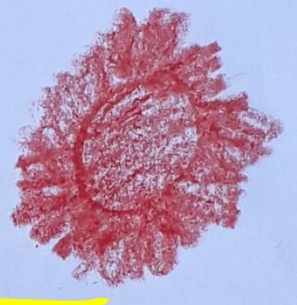

आशीर्वचन

जी रये जागि रये, यौ दिन यौ मास भेटने रये
धरती जस चकव है जाये, आकाश जस उच्च है जाये
दुबैक जस जड़ है जो, पातिक जस पौव है जो
सूरजक जस तराण है जो, स्यावैक जस बुद्धि है जो
सिल पिसी भात खवाये, जाँठि टेकि झाड़ जाये

घुघूति बासूति E-book

दुतिया, हरेला एवं अन्य पर्वों पर घर के बड़े लोगों द्वारा बच्चों को सुख-समृद्धि और दीर्घजीवी होने के आशीर्वचन इन शब्दों के साथ दिए जाते हैं।